



# पत्र-पुष्प



## “अचल, अडोल, एकरस स्थिति बनाने की शुभ प्रेरणायें” दादी जी 21-04-22

अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा पवित्रता के बल से रूहानियत को धारण कर अपनी एकरस अचल अडोल स्थिति बनाने वाले, अपनी शुभचिंतक वृत्ति द्वारा पूरे विश्व को सुख शान्ति की अंचली देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रमाण बाबा हम बच्चों को चार प्रकार की सेवा का इशारा दे रहे हैं। पहली स्व-सेवा, दूसरी-विश्व सेवा, तीसरी-मन्सा सेवा और चौथी यज्ञ सेवा। यह चारों सेवायें हर एक को मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप से करनी है। साथ-साथ निर्भयता की शक्ति को धारण कर साक्षी दृष्टा बन बेहद का खेल देखना है। कोई भी दृश्य को देखते भयभीत नहीं होना है। यह क्या हो गया! अब क्या होगा... ऐसा नहीं होना चाहिए... अगर इस प्रकार के प्रश्न होंगे तो उसका इफेक्ट आयेगा इसलिए नर्थिंग न्यु का पाठ पक्का हो क्योंकि यह नाटक अनेक बार रिपीट हुआ है, अभी फिर से रिपीट हो रहा है। कोई भी सीन देखते घबराने की बात नहीं है। सदा विजयी, सदा निर्भय।

बाबा कहते बच्चे, कभी अपने को अकेला नहीं समझना, सर्वशक्तिवान बाप के साथ कम्बाइन्ड होकर रहना, याद की छत्रछाया के नीचे रहना तो भयमुक्त बन जायेंगे। अभी तो माया की विदाई का समय है, प्रकृति का भी परिवर्तन होना है, इसलिए वह अपना अन्तिम वार अजमायेगी। इसमें केवल शक्तिशाली याद ही सेप्टी का साधन बनेंगी। तो अभी हम सबकी साधना ऐसी हो जिसमें शरीर की एकाग्रता के साथ दिल, मन और बुद्धि भी एकाग्र हो। बुद्धि की लाइन बहुत क्लीन और क्लीयर हो ताकि परमात्म टचिंग को ठीक तरह कैच कर सकें। बोलो, इतना अटेन्शन रख तीव्रगति का पुरुषार्थ चल रहा है ना! कोई भी सेवायें हमारी स्थिति को डगमग न कर दें। अब सब हदों से निकल बेहद विशाल बुद्धि, विशाल दिल रख सेवाओं को सम्पन्न करना है। सेवाओं में सिर्फ दो बातों का ध्यान रहे: 1-आपसी एकता 2- संकल्पों की एकाग्रता व दृढ़ता। यही सफलता का साधन है। ऐसा ही लक्ष्य रख अभी उड़ती कला में उड़ने का समय है। चलने वा दौड़ लगाने का नहीं।

बाकी इस बार की वार्षिक मीटिंग भी बहुत उमंग-उत्साह के साथ सम्पन्न हुई, (जिसकी रिपोर्ट आपके पास ईमेल द्वारा पहुंच गई होगी) सभी ने इस वर्ष को “आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए दया व करुणा वर्ष” के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी थीम के अन्तर्गत पूरे वर्ष ब्राह्मणों की स्व-उन्नति और सेवा के कार्यक्रम रखे जायेंगे। मधुबन में तो इस बार चारों तरफ योग तपस्या के ही कार्यक्रम चल रहे हैं। बाबा के सभी नये पुराने बच्चे बहुत उमंग-उत्साह से मधुबन में आते, ज्ञान योग की गहरी अनुभूतियां कर, खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। आप सब भी विशेष विश्व को सकाश देने के लिए मन्सा सेवा का अभ्यास कर रहे होंगे। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के.रतनमोहिनी



## ये अव्यक्त इशारे



### निर्भयता की शक्ति को धारण कर अचल-अडोल एकरस स्थिति बनाओ

1) वर्तमान समय विश्व में विनाश ज्वाला की अग्नि तेज होती जा रही है ऐसे समय पर आप बच्चों को निर्भयता की शक्ति धारण करनी है। निर्भय होंगे तो विनाश ज्वाला के प्रभाव में डगमग नहीं होंगे। हलचल में नहीं आयेंगे। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति दे सकेंगे। विनाश के दृश्य देखते स्थापना के नज़ारे दिखाई देंगे।

2) आपकी एक आँख में मुक्तिधाम, स्वीट होम है और दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ है। अपना घर, अपना राज्य सामने दिखाई देता है। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। हमारा घर, हमारा राज्य .. इस खुशी में नाचते गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे।

3) आज की दुनिया में धन भी है और भय भी हैं। जितना धन उतना भय में ही खाते, भय में ही सोते। और आप बच्चे बेफिकर बादशाह हो। निर्भय हो। भय को भी भूत कहा जाता है। आप उस भूत से छूटे हुए हो क्योंकि भय वहाँ होता है जहाँ मेरापन होता है। आप कहते हो मेरा बाबा। तो यह एक बाबा शब्द ही निर्भय बनाता है। बाबा के सिवाए सोना हिरण भी अगर मेरा है तो भय है।

4) अन्त समय में अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर चाहिए। तो बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो।

5) आप बच्चे ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? तो सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है, उसे भस्म करने वाले बने। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा।

6) लोग डरते हैं मरने से और आप तो हैं ही पुरानी दुनिया से मरे हुए। तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा! आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है, चीजों का या परिवार का फिकर होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी, न्यारे हो। देह सहित किसी में भी लगाव न हो तब निर्भय रह

सकेंगे।

7) आप बच्चों को निर्भय और हर्षितमुख हो यह बेहद का खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी - क्या हो गया, क्यों हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, ऐसी स्थिति वाले को इफेक्ट आयेगा, इसलिए नथिंग न्यू का पाठ पक्का करो।

8) सभी बहादुर हो ना! डरने वाले नहीं। यह नाटक कितनी बार रिपीट हुआ है। अभी फिर से रिपीट हो रहा है इसलिए घबराने की बात नहीं। शक्तियाँ सदा विजयी, सदा निर्भय। जब अपने को अकेला समझते हो तब भय होता है, सदा बाप की छत्रछाया के नीचे रहो तो निर्भय बन जायेंगे।

9) जो बच्चे सदा निरवैर हैं उन्हें किसी से भय हो नहीं सकता। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। प्रकृति को भी पावन बनाने वाले प्रकृतिपति हो। तो ऐसी शुभ भावना, शुभ कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। स्वयं योगयुक्त स्थिति में स्थित हैं तो कैसी भी परिस्थिति में सेफ जरूर हैं।

10) दुनिया के लिए कुछ भी हो लेकिन आपके लिए बाप की याद एक किला है। जैसे किले के अन्दर कोई नहीं आ सकता। ऐसे याद के किले के अन्दर सेफ रहेंगे। अभी तो रिहर्सल चल रही है। रीयल तो और है। रिहर्सल पक्का कराने के लिए की जाती है इसलिए हर सीन देखते सदा निर्भय रहो। निर्भयता के लिए मुख्य पुरुषार्थ है - निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से होता है।

11) जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसी रीति जब श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे, तो कोई भी मुश्किल परिस्थितियों वा विघ्नों से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमजोर शूरवीर हो जाता है।

12) जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार

खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता है। तो आप के पास भी सर्व शक्तियों रूपी शस्त्र सदा साथ हैं, सिर्फ आह्वान करो अर्थात् मालिक बन आर्डर करो तो सफलता सदा हुई पड़ी है।

13) वर्तमान समय विनाश के समाचार देखते, सुनते सभी आत्मायें भयभीत हैं। हर एक को चिंता है कि पता नहीं कल क्या होगा! लेकिन जितना ही वह फिकर में है, चिंता में है, उतना ही आप शुभ चिन्तक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से सभी को सुख-शान्ति की अंचली दो, अकाले मृत्यु वाली आत्माओं को, अकाल मूर्त बन शान्ति और शक्ति का सहयोग दो।

14) वर्तमान समय सीजन ही अकाले मृत्यु की है। जैसे वायु का, समुद्र का तूफान अचानक लगता है, ऐसे यह अकाले मृत्यु का भी तूफान अचानक और तेजी से एक साथ अनेकों को ले जाता है। यह अकाले मृत्यु का तूफान अभी तो शुरू हुआ है। विशेष भारत में सिविल वार और प्राकृतिक आपदायें ये ही हर कल्प परिवर्तन के निमित्त बनते हैं, इसलिए इसमें सेफ्टी के लिए अकाल तख्त नशीन बनने का अभ्यास करो।

15) कैसी भी परिस्थिति में अपनी स्थिति एकरस बनानी है तो श्रीमत में कभी मनमत, देहअभिमान-पने की मत, शूद्र-पने की मत मिक्स नहीं करना। अगर मन भिन्न-भिन्न रसों में भटक रहा है तो स्थिति भी भिन्न-भिन्न है। एक ही रस में रहो तो स्थिति एकरस बन जायेगी।

16) हर दृश्य को देखते अपनी एकरस स्थिति बनाने के लिए सिवाए एक के और कुछ भी देखते हुए न देखो। यह जो कुछ देखते हो यह कोई भी वस्तु रहने वाली नहीं है। तो एकरस, स्थिरियम तब रह सकेंगे जब कोई भी दृश्य देखते क्यों, क्या की उत्पत्ति न हो, यही व्यर्थ संकल्पों की हलचल का कारण है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी।

17) किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अथवा माया का वार, वार नहीं है लेकिन खेल के समान अनुभव हो तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और अवस्था एकरस रहेगी। लेकिन अगर इसे वार समझेंगे तो घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे।

18) आत्मिक स्थिति के अभ्यास से वायुमण्डल को रुहानी बनाओ तो और सब बातें स्वतः ठीक हो जायेंगी, सब एकमत और एकरस हो जायेंगे फिर माया भी नहीं आयेगी क्योंकि वायुमण्डल शक्तिशाली होगा। वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए याद के प्रोग्राम रखो और आपस में उन्नति के लिए रुह-रुहान की क्लासेज़ करो, स्नेह मिलन करो। धारणा की क्लासेज़ रखो तो सफलता मिल जायेगी।

19) एकरस स्थिति में स्थित होने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत बनो।

कर्मयोगी बनकर रहो। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा - इसका यह पार्ट चल रहा है। वह अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखेगा और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखेगा, यही एकरस स्थिति बनाने का साधन है।

20) सदा एकरस, अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइंट है। इसे शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता। लेकिन जो सिर्फ प्वाइंट के रूप में धारण करते हैं वह ड्रामा की प्वाइंट वर्णन भी करेंगे और हलचल में भी आते रहेंगे।

21) विनाशी साधनों को सहारा वा आधार नहीं बनाओ। यह सब निमित्त मात्र हैं, सेवा के प्रति हैं। सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों की आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। एकरस का अर्थ यह नहीं कि सदा एक जैसी रफ्तार हो। एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे। सर्व सम्बन्धों की अविनाशी तार एक से जुटी हुई हो। एक बाप दूसरा न कोई - यह दृढ़ संकल्प हो, एक भी सम्बन्ध कम न हो तब हर परिस्थिति में एकरस स्थिति रहेगी।

22) जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं। ऐसे आपका श्रेष्ठ संकल्प इन्जेक्शन का काम करेगा। संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाए - अभी इस सेवा की बहुत आवश्यकता है। स्वयं की सेफ्टी के लिए भी शुभ और श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बन सकेंगे।

23) कैसी भी परिस्थिति हो, वातावरण हो, वायुमण्डल हो या प्रकृति का तूफान हो लेकिन इन सबके होते हुए, देखते हुए, सुनते हुए, महसूस करते हुए, जितना ही बाहर का तूफान हो, उतना स्वयं अचल, अटल, शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित होने का अभ्यास हो। शान्ति में शान्त रहना बड़ी बात नहीं है, लेकिन अशान्ति के वातावरण में भी शान्त रहना इसको ही ज्ञान-स्वरूप, शक्ति-स्वरूप, याद-स्वरूप, और सर्वगुण-स्वरूप कहा जाता है।

24) आगे चलकर प्राकृतिक आपदाओं के कारण धन होते हुए भी काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। उस समय सबका संकल्प होगा कि कोई शक्ति देवे, शान्ति देवे जो हम इन आपदाओं से पार हो सकें। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं, इसके लिए आपके पास पहले से ही सर्व शक्तियों का स्टॉक चाहिए।

25) वर्तमान समय प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु विदेही अवस्था का अभ्यास

करने वाले बच्चों पर कोई भी परिस्थिति, कोई भी हलचल अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। वह अचल अडोल रह पास विद ऑनर बन जाते हैं।

26) प्रकृति अपना कैसा भी रंग रूप दिखाये लेकिन जो बाप समान अव्यक्त रूपधारी फरिश्ता स्थिति में रहते हैं, वे प्रकृति की हलचल को देखते हुए सदा अपनी अचल स्थिति में रहते हैं, उन्हें कभी यह संकल्प नहीं आ सकता कि क्या होगा, कैसे होगा। प्रकृतिपति अपने स्वमान की सीट पर सेट रहते हैं, अपसेट नहीं होते।

27) जो अपने सम्पन्नता की स्थिति में स्थित रहते हैं उन्हें प्रकृति की हलचल चलते हुए बादलों के समान अनुभव होती है। उनके अन्दर किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प नहीं आ सकते। वह डबल लाइट फरिश्ते जीवन का अनुभव करते हैं।

28) आप लोगों ने प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफा करो। तो आपके आर्डर से वह सफाई करायेगी इसलिए आप कभी हलचल में नहीं आना। सदा अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित रह प्रकृति का खेल देखना, घबराना नहीं।

29) आप सब अलौकिक हो, साधारण नहीं। साधारण लोग हलचल में आयेगे, घबरायेगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माये खेल देखते अपने विश्व कल्याण के कार्य में बिजी रहेगे। अभी चारों ओर प्रकृति के सभी तत्व खूब हलचल मचायेगे। इस हलचल में सेफ्टी का साधन है - सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लेना।

30) जो परमात्म दिलतख्त नशीन आत्माये हैं वे माया और प्रकृति के तूफानों में सदा सेफ रहते हैं। उन्हें कोई भी हलचल हिला नहीं सकती। उनका ही यादगार अचलघर है। उनके आगे कोई भी विघ्न, कोई भी समस्या नहीं आ सकती। न प्रकृति वार कर सकती, न माया वार कर सकती। दिलतख्त-नशीन बनना अर्थात् सहज प्रकृतिजीत, मायाजीत बनना।

31) कभी योगी पुरुष को वा पुरुषोत्तम आत्मा को प्रकृति प्रभावित नहीं कर सकती। ब्राह्मण आत्माये पुरुषोत्तम आत्माये हैं। प्रकृति पुरुषोत्तम आत्माओं की दासी होती है। मालिक, दासी के प्रभाव में नहीं आ सकते। योगी व प्रयोगी बनो तो ये पांच विकार, जो दूसरों के लिये जहरीले सांप हैं वे आपके गले की माला बन जायेगे।

## (त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

मुरली सुनकर उसे रिपीट करो, उसे समझो, सिमरण करो,  
मनन चिन्तन करो तो व्यर्थ से छूट जायेंगे।

(गुल्जार दादी जी)

हम सभी बाबा की श्रीमत पर सेवा के लिए भिन्न भिन्न स्थान पर गये हैं लेकिन हम सबकी परमानेंट एड्रेस मधुबन है। तो आप सब अपने घर में पहुँच गये हैं रिफ्रेश होने के लिए। यहाँ पर आने से बहुत आराम मिलता है, यहाँ मन सारा टाइम डांस करता रहता है। मन की डांस में थकावट नहीं होती है, और ही रिफ्रेश होते हैं। यज्ञ सेवा का अच्छा चांस मिलता है बाकी और किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी नहीं है। तो सारा दिन मन को खुशी में रखने की खूब कोशिश करो, अटेन्शन रखो, कि मेरा एक सेकण्ड भी व्यर्थ न जाये। यहाँ यज्ञ सेवा करके जो पुण्य की पूँजी जमा कर रहे हो, यही साथ जायेगा। यही आगे 21 जन्म तक काम आयेगा। तो अच्छी तरह से ध्यान रख करके श्रेष्ठ कर्म से अपनी खूब कमाई कर लो। और यहाँ यह पुरुषार्थ जितना चाहो

उतना सहज कर सकते हो, वायुमण्डल का सहयोग है, सभी बातों का सहयोग है। यहाँ बाबा की छत्रछाया है इसलिए माया आने की बात ही नहीं है। छत्रछाया है तो बेफिक्र बादशाह है।

ज्ञान सागर की लहरों में, मनन शक्ति से मन-बुद्धि को लहराते रहो। जो मुरली सुनी उसको बार-बार रिपीट करो माना अर्थ सहित उसे समझो और उसी का सिमरण करो तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा। अगर ज्ञान की इन लहरों में नहीं लहराये तो वेस्ट थॉट्स चलेंगे। फिर वेस्ट को बेस्ट करने में मेहनत करनी पड़ेगी इसलिए बाबा ने होमवर्क दिया है कि होलीहंस बन सारा दिन सदैव ज्ञान की बातों में ही मगन रहो। यह होम वर्क अच्छी तरह से कर लो तो पहले नम्बर में आ जायेंगे। अच्छा।

# अचानक शब्द को स्मृति में रख एवररेडी बनो, समय प्रमाण सर्व शक्तियों को यूज़ करो

गुल्जार दादी जी

एक ओम् शान्ति शब्द में हमें तीन बातें इकट्ठी याद आ जाती हैं। एक तो मैं स्वयं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, दूसरा मेरा बाबा शान्ति का सागर है और तीसरा मेरा असली घर शान्तिधाम है। इस अर्थ सहित ओम् शान्ति की स्मृति से समस्या समाधान रूप में परिवर्तन हो जाती है। व्यर्थ संकल्प श्रेष्ठ संकल्प में परिवर्तन हो जाते हैं। तो यह ओम् शान्ति का महामंत्र सदा अपने जीवन में कार्य में लगाना है। अगर हम यह महामंत्र समय पर कार्य में लगाते हैं तो हमारा सारा दिन बड़ी खुशी में बीतता है।

जो ऊंचे स्वमान में रहते हैं वो औरों को भी सम्मान देते हैं क्योंकि हम ब्राह्मण आपस में अपनेपन का अनुभव करने के लिए 5 हजार वर्ष के बाद यानि बहुत दिनों के बाद मिले हैं। इसी स्मृति से अगर हम आपस में एक दो से मिलते हैं तो बहुत खुशी होती है, बहुत प्यारे लगते हैं। स्वयं भगवान ने हमारा मिलन कराया है, मिलाया है। तो मैं कौन हूँ? हमारा मीठा बाबा कौन है और क्या है? यह पक्का निश्चय होना चाहिए। यही हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। अगर मेरा बाबा है तो सारे दिन में भिन्न-भिन्न प्रकार से मेरा बाबा ही याद आना चाहिए। क्योंकि जो मेरा है वो नहीं भूलता है, मैं और मेरा का रूप भले बदलता है लेकिन वो भूलता नहीं है। ऐसे हम सारे दिन में मैं और मेरा अनेक बार कहते रहते हैं, कहना ही पड़ता है। मैं आत्मा और मेरा बाबा कहते रहेंगे तो हमारी यह ब्राह्मण लाइफ बहुत श्रेष्ठ होगी। तो बाबा शब्द भी दिल से याद रहे, मंत्र मुआफिक नहीं, दिल कहे मेरा बाबा। यह एक बाबा शब्द हमारे जीवन को बहुत-बहुत महान बना सकता है।

कई आत्मायें कहती हैं कि जितना समय हम याद में रहना चाहते हैं उतना समय याद ठहरती नहीं है, तो बाबा कहते हैं तो दो बातें अपने मन में जरूर याद करो कि बाबा ने क्या से क्या बनाया है और क्या क्या दिया? तो प्राप्ति कराने वाला कभी भूलता नहीं है। कल क्या थे और आज क्या बन गये? इसकी बहुत लम्बी लिस्ट बनाके अपने सामने रखो, तो याद कभी भूल ही नहीं सकती। प्राप्तियों को याद करने से खुशी होती रहेगी। सतयुग में भी इतनी प्राप्तियां नहीं होगी जितनी इस समय संगम पर हमें बाबा से होती हैं। सम्बन्ध भी मिलता है, सम्पत्ति भी मिलती

है। इस समय के महत्व को जानो और इस समय रूपी खजाने को विधिपूर्वक कार्य में लगाओ तो जमा का खाता बढ़ेगा। ऐसे ही हम सर्व शक्तियों के मास्टर सर्वशक्तिवान है तो शक्तियों को जैसे और जब भी यूज़ करना हो वैसे कर सको तो उसका महत्व और बढ़ता है। जिस शक्ति को हम ऑर्डर करते हैं वो शक्ति हाज़िर हो जाये इसको कहा जाता है मास्टर सर्वशक्तिवान। अगर कोई चीज़ समय पर काम में नहीं आती है तो वो चीज़ होते भी क्या फायदा?

तो चेक करो कि श्रेष्ठ संकल्प द्वारा व्यर्थ समाप्त हो जाता है? क्योंकि व्यर्थ बहुत फास्ट नुकसान करता है अगर व्यर्थ चलता रहा तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान कैसे हूँ? परिवर्तन की शक्ति मेरी समय पर यूज़ ही नहीं होती है तो मैं मास्टर कैसे हूँ! तो यह अभ्यास करना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ वो सोच ही चलता रहे कि होना तो चाहिए, हुआ नहीं, एक दिन लग गया, दो दिन लग गया। और बाबा ने तो इशारा दिया है कि कोई भी समय किसी का भी अचानक कुछ भी हो सकता है। तो अचानक शब्द को ध्यान में रखते हुए एवररेडी बनके तैयार रहो। फिर तो बस, बाबा ने बुलाया चला गया, ऐसे हो जायेगा। ऐसे एवररेडी हम सबको बाबा बनाना चाहता है। तो हमसे जो बाबा चाहता है वही तो हम बच्चों को करना है। इसी एक धारणा से ही तो मम्मा नम्बरवन में चली गयी।

हमें सिर्फ कर्मकर्ता ही नहीं बनना है, कर्मयोगी बनना है। दुनिया में कर्मकर्ता तो बहुत हैं। कर्मयोगी बनके कर्म करना माना कर्म को एकाग्रता से करना। एकाग्रता माना योग। योग में रहकरके कर्म करने से हर कर्म श्रेष्ठ होगा, सफल होगा। योगी जीवन की आदत भी पक्की हो जायेगी। तो मन की एकाग्रता से बाबा को याद करते रहें और हाथों से कर्म करते रहे तो अन्तिम एक सेकण्ड के पेपर में पास हो सकेंगे। बाप समान बन जायेंगे। तो दिल कहे बाबा, तो चेहरा एकदम खिल जाये, ऐसी अवस्था अपनी बनानी है। तो बाबा को ऐसा खुश-किस्मत वाला खुशानुमः चेहरा दिखायेंगे ना। तो यहाँ से यह वरदान लेके जाओ कि हम खुशानसीब हैं, वाह रे मेरी किस्मत! तो इसी नशे और खुशी में रहना। अच्छा।

## बाबा के दिल को वही जीत सकता है जो किसी को दुःख नहीं देता है, क्षीरखण्ड होकर रहता है और श्रीमत पर एक्यूरेट चलता है (दादी जानकी 2006)

शुक्रिया बाबा आपका, जितना हम बाबा का शुक्रिया मानेंगे उतना अच्छा है। जो बाबा से पाया है, उससे दुनिया वालों को जब सुख मिलेगा तब उनकी भी दिल कहेगी शुक्रिया बाबा आपका। जो बाबा से पाया है उसको दिल में समाके रखो तो शुक्रिया निकलता है। तो जिससे जिसको प्राप्ति होती है, उनसे उनके प्रति शुक्रिया आपेही निकलती रहती है।

जो अभी बाबा के दिलतखनशीन बनते हैं उनकी प्रालब्ध भविष्य में भी बड़ी ऊंची होगी। बाबा के दिल में हमारे प्रति जो भावना है, वही हमारे दिल में है। ईश्वरीय परिवार में बाबा के बच्चे आपस में क्षीरखण्ड होके रहें यानि एक दो को समझ करके दिल से एक दो को रिसपेक्ट दें। ऊपर ऊपर से न चलें, अपने स्वभाव वश किसी को समझने की कोशिश भी न करें। कई हैं जो अपने को ही अच्छा समझते, दूसरों की अच्छाई पर इतना ध्यान नहीं देते हैं। कहेंगे हम जैसे हैं, अच्छे हैं फिर और अच्छा श्रेष्ठ बनना है, उसको सामने न रख करके जो श्रेष्ठ बने हैं उनको ही देख खुश होंगे। जैसा बाबा चाहता है वैसा मुझे बनना है, खुद ऐसा बनें यह उनसे नहीं होगा। बाबा तो सबको सबकुछ समान रूप से दे रहा है।

जो भाग्यवान हैं, सौभाग्यवान हैं, हजार भाग्यवान हैं, पदमापदम भाग्यशाली बनने वाले हैं, उनकी दो बातें देखने में आयेंगी। एक मात-पिता मेरे हैं तो सुख बहुत होगा। उनके पास दुःख का नाम-निशान नहीं होगा। दुःख क्या चीज़ होता है, इसका अनुभव ही न हो और सुख क्या चीज़ है वो अनुभव बहुत हो। तो एक मेरे मात-पिता हैं तो सुख बहुत है, ढेर सुख है। वर्णन करने की बात नहीं है, पर दिखाई पड़ता है सुखी बहुत है। दूसरा सुखी कौन है? जिसको शान्तिधाम घर याद है। कहने में शब्द भी ऐसे निकलते हैं - सुख-शान्ति। तो परमात्मा को मात-पिता समझने से एक तो सुख मिला दूसरा परमधाम को अपना घर समझने से शान्ति मिली।

जो किसी को दुःख नहीं देता है, क्षीरखण्ड होकर रहता है, श्रीमत पर एक्यूरेट चलता है वही दिलतखनशीन बनता है। जो मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होते हैं वही एक्यूरेट

चलते हैं। जिसको एक्यूरेट बनना है, वही एक्यूरेट चलेगा। हमारे साथ चलने में किसी को कोई भारीपन नहीं लगेगा। तो हर आत्मा के प्रति हमारा कोई चिंतन, संकल्प न चले कि इनके साथ कैसे चलूँ? ख्याल भी किया तो दीवार आ जायेगी। जिसने बाप को समझा, शान्तिधाम को घर समझा, ड्रामा का अर्थ समझा, उसके लिए हर बात सहज है, कुछ भी मुश्किल नहीं है। उसके मुख से ऐसी भाषा नहीं निकलती कि इनके साथ रह करके तो देखो। ऐसी भाषा वाली सतयुगी आत्मा नहीं हो सकती। वह तो एक बाबा की याद में मस्त रहती है। अगर चलते-चलते कहाँ किसी देहधारी से लगाव हो गया या कोई स्वभाव, संस्कार का टकराव हो गया तो सारी मार्क्स एकदम खत्म हो जाती। जरा सा भी काम क्रोध आया तो फुल पास तो छोड़ो, पास मार्क्स भी नहीं मिलेंगी इसलिए स्वयं को सम्भालो, मंजिल ऊंची है। पढ़ाई से इतनी ऊंची तकदीर बन रही है। जरा-सा भी कोई विकार है माना बड़ा दुश्मन है। वो अन्दर की सारी शक्ति छीन लेता है क्योंकि विकार तो पाँयजन का काम करता है। देखने में अच्छा लगता है, पर हे आत्मा अर्जुन यह विष है, यह एकदम नीचे गिराता है इसलिए इसे छोड़ अमृत पी। तो बाबा स्पष्ट समझाता है, सूक्ष्म में भी काम विकार अंश मात्र है तो अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना बड़ा मुश्किल है। काम क्रोध रूपी कैद में वो जैसे चलायेंगे वैसे चलने वाले भगवान की बात को भी सुनी अनसुनी करते रहेंगे। काम क्रोध के ख्याल आ रहे हैं, उन्हीं की बातें सुनाई दिखाई देती हैं माना वो बाबा को देख नहीं सकते हैं। वो बाबा से दृष्टि भी नहीं ले सकते हैं, तो गोदी में कैसे बैठेंगे!

तो जो बाबा समझा रहा है, सिखा रहा है, वो अच्छी रीति सुनके समझ रहे हैं, तो उनकी आँखें खुली हुई होगी। अगर और कुछ बुद्धि में होगा तो उनकी आँखें बन्द जरूर होंगी, वो सुन नहीं सकते हैं। उनके कानों द्वारा बाबा के महावाक्यों का आवाज जा नहीं सकता है। सुनना कानों से है और देखना आँखों से है। अगर आँखों से नहीं देख सकते हैं तो कानों से सुन भी नहीं सकते हैं इसलिए बहुत सम्भल करके चलना है, मंजिल

ऊंची है, जाना है पार। जिसको पार जाना है वो ऐसे ऐसे पास करता जायेगा, उसको बाबा खींचता जायेगा फिर माया उसका पीछा कर नहीं सकेगी। माया पीछा उसका करती है जिसने घर जाने का अभी सोचा ही नहीं है। जो व्यर्थ संकल्प चलाने वाला है उसके लिए माया को भी छुट्टी मिल जाती है। लेकिन जो समर्थ संकल्प चलाने वाले हैं, उनके लिए तो माया गेट आउट। माया उनसे डर जायेगी। तो इतना महावीर बनो, मायावी बातों को अवाइड करो। उसके पास व्यर्थ देखने, सुनने का टाइम ही कहाँ!

यह संगमयुग है मेला मनाने के लिए। अभी आत्मा और परमात्मा का मेला लगा है, इस मेले में आने की खींच दूसरों को भी हो। यह मिलन मनाने की घड़िया हैं, माया इनसे किनारा कराने चाहती है। अन्दर से माया की खींच होगी तो यहाँ बैठ नहीं सकेंगे। अरे! बाप मिला सबकुछ मिला। यह परमात्म मिलन का अनुभव बताया नहीं जाता है, उनके संग में जो आते हैं वो अनुभव कर लेते हैं। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन (मधुर महावाक्य) बाहर की बातों से अन्तर्मुख बनो तब बाबा की आकर्षण में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी

(1998)

1) सेकण्ड में इस देह की स्मृति से परे जा सकते हो? क्योंकि हम राजयोगियों का जो अपने इस योग का अनुभव है - वह अनुभव है - यहाँ बैठे-बैठे सेकण्ड में अपने वतन में उड़कर पहुंच जायें। जब सन्देशियाँ उड़कर जा सकती, वह तो ट्रान्स है। हम बुद्धिबल से अपने फरिश्तों की अव्यक्त दुनिया में बाबा से मिलन मनाने उड़ जाएं। इस शरीर से अशरीरी न्यारे बन, उसी फरिश्तों की दुनिया में, लाइट की दुनिया में अव्यक्त बाबा के सामने मिलन मनायें, तो इस जैसा अतीन्द्रिय सुख कोई नहीं है। यह दिल के अनुभव का गीत वही गा सकते जो इसकी प्रैक्टिस करते और बराबर उस परम आनन्द का अनुभव करते हैं।

2) गोपियों का जो अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है, वह प्रैक्टिकल में हम राजयोगियों के सुख का ही गायन है। जितना इस देह से न्यारे बन आत्मा निश्चय कर, बाबा से मिलन मनाते हैं तो इस मिलन से बाबा सर्व शक्तियाँ भर देता, जिसको ही तपस्या कहा जाता है। यही राजयोग है। इसका निरन्तर अभ्यास चाहिए, भट्टी चाहिए।

3) हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, उनकी बुद्धि सहज ही दुनिया की सर्व बातों से हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि

वृत्ति में एक बाबा ही रहता है। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइन्ड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियाँ नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं।

4) ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा की शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहाँ पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

5) मधुबन में आते हो तो यहाँ दो बातें ही हैं - एक तो ज्ञान की गहरी धारणा युक्त क्लासेस मिलती, रोज़ सुबह शाम योग में रहने की प्रैक्टिस करते, यही प्रैक्टिस दिन भर करते रहो तो बहुत मदद मिलती है। हर घण्टे पाँच मिनट भी साइलेन्स की अनुभूति करो तो अनेक बातों पर विजय पाने की शक्ति आयेगी, जो बाबा कहते माया पर विजय पहनो, वह विजय तब होगी जब ज्ञान सहित योग में रहेंगे। फिर माया नहीं आयेगी, बुद्धि यहाँ

वहाँ नहीं जायेगी। मुरली ज्ञान में पक्का कराती परन्तु सवेरे का योग अशरीरी बनने में बहुत बड़ा बल देता है इसलिए योग में सचमुच यह अनुभव हो जैसे हम इस देह से उड़कर बाबा के पास वतन में पहुँच गये हैं।

6) निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्मवतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है – यह अनुभव होना चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दुःख में सिमरण सब करें वैसे बांधेलियों पर बन्धन हैं तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है, मौज है, मस्त रहते यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट रूप बन आप लोगों से मिलन मनावे। यही है रूहानियत की यात्रा। तो सदा ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करनी और करानी है।

7) कईयों में इसकी बहुत रुची होती, कईयों में नहीं होती। रुची है तो सुख होगा, अगर इसकी रुची कम है तो बाबा के मिलन का सुख अनुभव नहीं होगा। जैसे सेवाओं में रुचि रखते तो सेवा के साथ-साथ मेवा भी खाते रहते। इससे कितनी आत्माओं का कल्याण होता, यह अनुभव करते रहते हो। दूसरों को कोर्स कराना माना खुद करना।

8) सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करता रहेगा। बाबा कहता बच्चे, तुम मेरी नज़रों में छिप जाओ। बाबा की मुरली में है वो मेरे मीठे-मीठे नूरे रत्नों, यह किसने बोला? नूर माना आंखें। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए। है कोई दुनिया में जो कहे कि हम भगवान के नयनों के नूर हैं। हमें भगवान कहता तुम मेरे नयनों के तारे हो। बाबा ने अपनी नज़रों में हमें छिपा दिया है। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है - जाना है,

सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते, यह सब होता रहेगा परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए।

9) सबसे पहले अपनी हर प्रकार से स्थिर स्थिति चाहिए। कोई कितना भी मन खराब करे, संग में कभी नहीं आना। इस एज में सबसे बड़ा दुश्मन है - संग। संगदोष बुद्धि को बदल देता है। सबसे प्यार करो सब फ्रैन्ड्स हैं, पर्सनल फ्रैन्ड किसको नहीं बनाओ। यह अण्डरलाइन करो। हमारी प्यारी रूहरिहान होती है, रूहों को राहत देने की, ज्ञान की रूहरिहान करेंगे, सेवा की रूहरिहान करेंगे, सर्विस के प्लान करेंगे, आपस में जो भी लेन-देन करेंगे, मीटिंग करेंगे इसीलिए कि उससे कोई भी यज्ञ की कारोबार है, जो भी कुछ है उनका हल करना है। बाकी दिल तो क्या होती है! दिल तो दिलबर को दे दी, बाकी क्या दिल है। कोई कहते दिल की लेन देन करते, हमारे दिल की बातें कौनसी होती हैं, जो लेन-देन करें? दिल की बातें यही हैं - वाह मेरा बाबा! उनके सिवाए कोई दिल की बातें नहीं हैं। पर्सनल किसी के साथ बैठकर बातें करना, यह दोस्ती नहीं दिल की बातें नहीं हैं लेकिन संगदोष है। एक दूसरे के प्रति मन खराब करना - यह ऐसी है, वह वैसा है - यह गलत है।

10) अगर आपके मन में कोई बात है तो भले कहो। आपस में इतना हल्कापन जरूर हो जो एक दो को बात कह सको। अगर मैंने कोई गलती की, तो आप मुझे बड़ी दिल से बोल सकते हो, बहन आज तुमने यह बात गलत की। वह मैं दिल से स्वीकार करती हूँ लेकिन वह दूसरे को मत सुनाओ। उससे मन खराब होता है। जब दो के बीच तीसरा तेरा मेरा करता तो तीन के बीच टकोरा पड़ता, माना डिसयुनिटी होती है। आपस में चाहे तीन हो या पाँच हो लेकिन रहना चाहिए सभी को मिलकर। रात को सोने से पहले दस मिनट भी आपस में मिलकर, ओम् शान्ति करके रूहरिहान करके फिर सो जाओ। कहने का भाव है कि आप लोग मन से भी खुश रहो, तन से भी खुश रहो। तुम भी खुश रहो तेरे से भी सब खुश रहें। सेन्टर में खुशनसीबी का वातावरण हो। आने वाले समझें, यहाँ हम आये तो कितना खुश होके गये। किसके भी चेहरे से उदासी, घृणा, नफरत यह फील नहीं हो तब तो मजा है। फिर भी अगर कोई 19-20 बात हो तो आप लोग अपनी तपस्या से उनको मिटाओ। हमारी रूहानी आकर्षण भी एक तपस्या है जो सबको सकाश देगी। अच्छा। ओम् शान्ति।